- ॥श्री-चन्द्रमौलीश्वराय नमः॥ ॥श्री-कामाक्षी देव्यै नमः॥ ॥श्री-कामाक्षी चूर्णिका॥
- १. जय जय श्री-कामगिरीन्द्र-निलये।
- २. जय जय श्री-कामकोटि-पीठस्थिते।
- ३. जय जय श्री-त्रिचत्वारिशत्कोण-श्रीचक्रान्तराल-बिन्दु-पीठोपरि-लसत्पञ्च-ब्रह्ममय-मञ्चमध्यस्थ श्री-शिवकामेश-वामाङ्क-निलये।
  - ४. जय जय श्रीविधिहरिहर-सुरगण-वन्दित-चरणारविन्दयुगले।
  - ५. जय जय श्रीमद्रमा-वाणीन्द्राणी-प्रमुख-रमणी-करकमल-समर्पित चरणकमले।
  - ६. जय जय श्री-निखिल-निगमागम-सकल-संवेद्यमान-विविध-वस्त्रालङ्कृत-हेम-निर्मितानर्घभूषण-भूषित-दिव्य-मूर्ते।
    - जय जय श्री-अनवरताभिषेक धूपदीप नैवेद्यादि नानाविधोपचारैः
       परिशोभिते।
    - ८. जय जय श्री-श्री-काञ्चीनगर्यां द्वात्रिंशद् धर्मप्रतिपादनार्थं स्थापित हेमध्वजालङ्कते।
    - ९. जय जय श्री-सकल-मन्त्र-तन्त्र-यन्त्रमय-पराविलाकाश स्वरूपे।
      १०. जय जय श्री-काञ्ची नगर्यां कामाक्षी इति प्रख्यात-नामाङ्किते।
      ११. जय जय श्री-महात्रिपुरसुन्दरी बहु पराक्।

This stotra can be accessed in multiple scripts at: http://stotrasamhita.net/wiki/Kanchi\_Kamakshi\_Churnika.

By generated on March 16, 2024

Downloaded from **②** http://stotrasamhita.github.io | **②** StotraSamhita | Credits